ISSN 2394-5303

International Multilingual Research Journal

Printing Area

Issue-39, Vol-01, March 2018

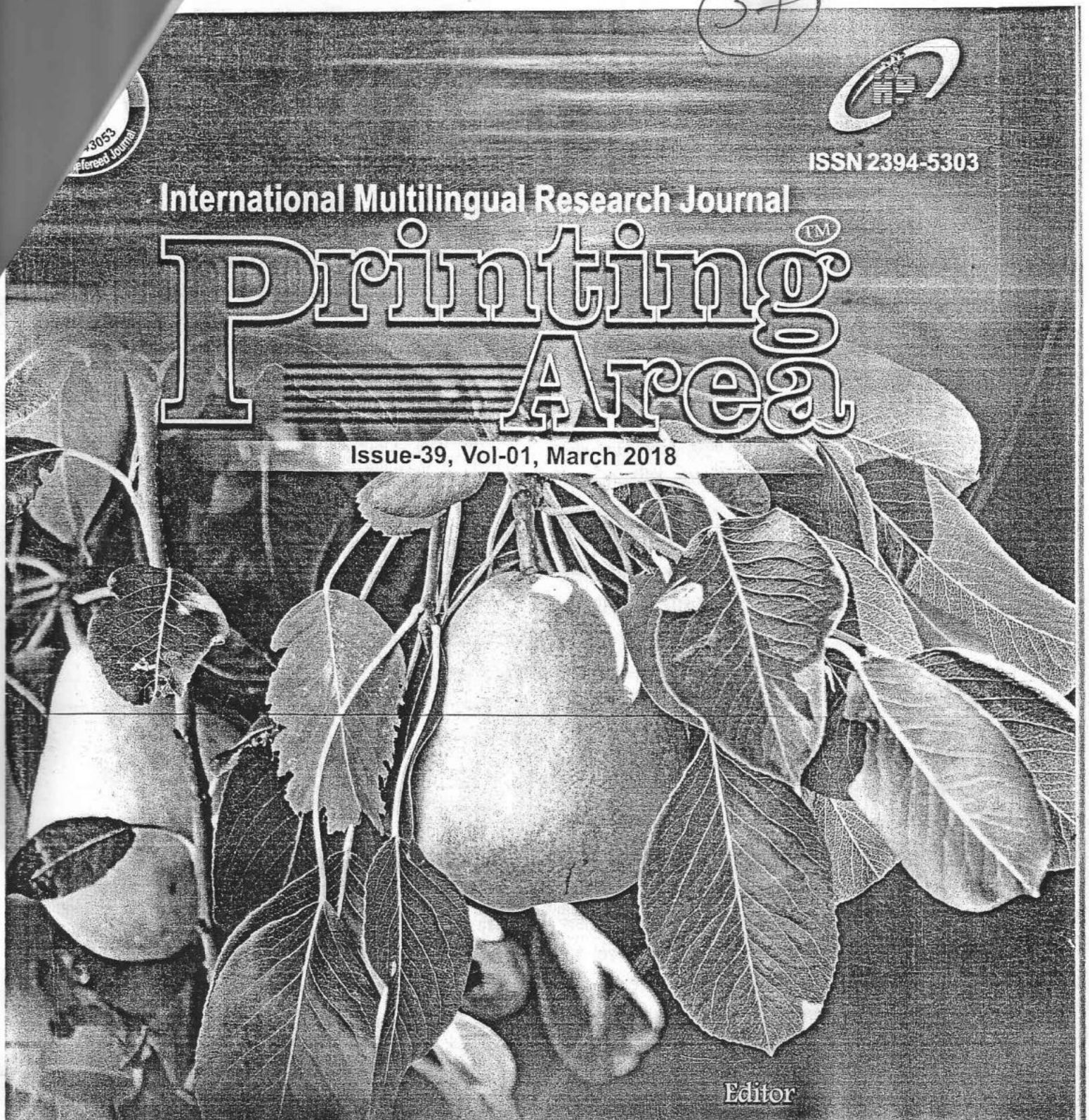

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

44

जम्मू कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद

डॉ० निधि रायजादा
एसोसिऐट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
के०एम०जी०जी० (पी०जी०) कॉलिज,
बादलपुर (गौतमबुद्धनगर)

अनुतोष कुमार
शोधार्थी (इतिहास विभाग)
के०एम०जी०जी० (पी०जी०) कॉलिज,
बादलपुर (गौतमबुद्धनगर)

****

आज सम्पूर्ण मानवता आतंकवाद नामक महामारी की वीभत्स जकड़ में है। भारत स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से आतंकवादियों द्वारा प्रयुक्त हिंसा व विध्वंस से त्रस्त होता रहा है। आज सीरिया, ईराक व अफगानिस्तान के साथ ही आतंकवाद से सर्वाधिक पीड़ित देषों में भारत का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। यह उल्लेखनीय है कि भारत आतंकवाद की वर्तमान लहर का सामना स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही कर रहा है। ५० के दशक में नागा, ६० के दशक में मिजो, ८० के दशक में सिक्ख तथा ९० के दशक से जम्मू–कश्मीर के इस्लामी आतंकवाद का सामना करना पड़ा। २६ नवम्बर २००८ को मुम्बई के ताज होटल पर हुए आतंकी हमले एवं जनता के कत्लेआम ने आम भारतीयों के मानस को इतना उद्वेलित कर डाला किं जनता सड़कों पर उतर आई और पाकिस्तान से युद्ध की माँग करने लगी। वर्तमान समय में मानव समाज के समक्ष आतंकवाद शान्ति और व्यवस्था के लिये एक गंभीर चुनौती के रूप में विद्यमान है। आतंकवाद डर की आखिरी हद या अंतिम सीमा का रूप धारण किये हुए है।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी का कथन है कि “आतंकवाद केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु पूरे विश्व के लिए एक गम्भीर समस्या है। यह अन्तर्राष्ट्रीय चरित्र का है और निकट भविष्यं में खत्म होने वाला नहीं। ११ सितंबर २००१ को अमेरिका के समृद्धि व शक्ति के सर्वोच्च प्रतीक न्युयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर एवं १३ दिसंबर २००१ को भारत की अस्मिता के सर्वोच्च प्रतीक भारतीय संसद भवन पर फिदायीन (आत्मघाती) हमलों ने यह बिल्कुल साफ कर दिया कि आतंकवाद वह भी इस्लामिक आतंकवाद भारत सहित पूरे विश्व के लिए कितनी बड़ी और कितनी भयानक वास्तविकता और सीधी चुनौती है। अंतर्राष्ट्रीय चरित्र के इस आतंकवाद का केन्द्र अफगानिस्तान और पाकिस्तान रहे है। पाकिस्तान तो जम्मू कश्मीर में चल रहे अन्धाधुन्ध हमलों को भी स्वतंत्रता संग्राम बताता रहा है। आतंकवाद का तन्त्र भी अंतर्राष्ट्रीय चरित्र का है। इसका धन प्रबंधन Hkh vajkZVªh; Lrj ij gksrk gSa[1]

आज भारत में जो आतंकवाद की गंभीर स्थिति है, वह स्थिति उन मूलभूत कारणों के संबंध में सोचने के लिये बाध्य करती है, जिन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आतंकवाद को जन्म दिया और उसे बनाए रखा। आतंकवाद से मुक्ति या आतंकवाद को नियंत्रित कर पानातभी सम्भव है जब न केवल सतही उपचार का प्रयत्न न करें अपितु आतंकवाद की आंतरिकजड़ों और कारणों की भी विवेचना करें।

पाक प्रायोजित आतंकवाद

विभाजन के तत्काल बाद भारत व पाकिस्तान के पारस्परिक सम्बंधों में उत्पन्न अविश्वास के संकट एवं तनाव का प्रभाव निरंतर इस क्षेत्र की सुरक्षा को प्रभावित कर रहा है। भारतीय सुरक्षा की “अवरोध–पथरी” (कश्मीर समस्या) एवं इस क्षेत्र का ऐसा ‘असाध्य रोग’ (Cancer) बना गया है जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था शनैः शनैः तार–तार होती नजर आ रही है। सन् १९४७–४८, १९६५, १९७१ व १९९९ में हुए भारत–पाक संघर्ष तथा